



सम्पादकीय

दिल में पुराने संस्कार, दिमाग में विज्ञान विनोबा

इस देश में दस हजार साल से एक संस्कृति चली आ रही है। उसका हमारे चित्त पर जोरदार असर हुआ है। उसे हममें से कोई भी टाल नहीं सकता। हमने एक जगह कहा था कि हमारा दिल पुराने संस्कारों से भरा हुआ होना चाहिए लेकिन दिमाग पुराने संस्कारों से दबा हुआ नहीं होना चाहिए। दिल की जड़ें होनी चाहिए पुरानी संस्कृति में, लेकिन दिमाग खुला रहना चाहिए।

हिंदुस्तान में कई लोग ऐसे हैं, जिनका दिल पुराने संस्कारों से भरा हुआ है लेकिन दिमाग पुराने संस्कारों से अलग नहीं है। इसलिए वे जप, जाप्य, ग्रहण आदि में भी श्रद्धा रखकर काम करते हैं। भगवान के लिए कुछ-न-कुछ श्रद्धा है, भक्ति है, परलोक के लिए श्रद्धा है, पुनर्जन्म के लिए श्रद्धा है। ये सब अपनी संस्कृति की देन हैं, यदि उनसे भरा हुआ हमारा दिल है तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन दिमाग ताजा नहीं, पुराने खयालों से दबा हुआ है। जातिभेद, छुआछूत इत्यादि काल्पनिक गलत खयालों से भरा हुआ है। पुराने जमाने में कुछ वीर पुरुष हो गये तो उस मध्ययुग में ही हमारा दिमाग काम करता है, बीच के काल में हिंदू-मुसलमानों के झगड़े हुए तो आज भी हम अपने दिमाग को उन विचारों से जकड़े हुए हैं। विज्ञान का जमाना आया है यह हम भूलते जा रहे हैं। दिमाग मध्ययुग में रखते हैं, लेकिन अब हमें अपना दिमाग पुरानी संस्कृति से स्वतंत्र रखना चाहिए। साइंस बढ़ रहा है, तो

कौन-सी ताकतें काम करेंगी, यह सोचना है। इसके आगे हम विश्वव्यापी कार्य कर सकते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनका दिल पुरानी संस्कृति से प्रभावित है लेकिन दिमाग खुला नहीं है, कुछ लोगों के दिमाग नये विचार के प्रति खुले हैं, लेकिन दिल पुरानी संस्कृति की समृद्धि से रहित है। ऐसे दो टुकड़े हुए हैं। दोनों नाकामयाब हुए हैं। इसलिए हमको तीसरे लोग ढूंढने होंगे। लेकिन वह भी हमारा काम रहेगा कि इन दोनों को समझाना होगा कि तुम्हारा चिंतन दोषपूर्ण है उसे बदलना होगा। इस जमाने के लायक चिंतन तुम्हारा नहीं है। उसका परिणाम यह होता है कि पुरानी संस्कृति की ताकत आपको नहीं मिलती। हमारा दिल पुराने जमाने के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए और दिमाग उससे स्वतंत्र। नहीं तो किया-कराया सब चला जाएगा। (विनोबा साहित्य : खंड 20)